SRI JIN KANTISAGARSURI SMARAK TRUST

tgkt eafnj] ekaMoyk&343042 ftyk&tkykSj jkt- nwjHkk"k% 02973&256107@9649640451

E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in / jahajmandir99@gmail.com

प्रेस विज्ञप्ति

कोयम्बतूर में मंदिर दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न

तमिलनाडु के कोयम्बतूर नगर में श्री विजयराजजी सौ. पारसमणि देवी पुत्र कुशलराज झाबक परिवार द्वारा स्वद्रव्य से निर्मित श्री स्तंभन पार्श्वनाथ जिन मंदिर एवं श्री जिनदत्तसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. एवं पूजनीया महत्तरा साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. सुमित्राश्रीजी म. प्रियमित्राश्रीजी म. मधुस्मिताश्रीजी म. एवं पूजनीया महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म. जितेन्द्रश्रीजी म. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. विश्वरत्नाश्रीजी म. रश्मिरेखाश्रीजी म. चारूलताश्रीजी म. मयूरप्रियाश्रीजी म. चारित्रप्रियाश्रीजी म. तत्वज्ञलताश्रीजी म. संयमलताश्रीजी म. आदि के पावन सानिध्य में परम भक्ति भावना के वातावरण में संपन्न हुई।

प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रारंभ ता. 29 जनवरी को कुंभ स्थापना से हुआ। ता. 30 को पूज्यश्री मंगल प्रवेश हुआ। च्यवन कल्याणक आदि विधान संपन्न किये गये।

शास्त्रीय आधार पर समस्त कल्याणकों के विधान मंदिरजी में ही किये गये। ता. 1 फरवरी को भव्य वरघोडा संपन्न हुआ। ता. 2 फरवरी को मंगल मुहूर्त्त में परमात्मा स्तंभन पार्श्वनाथ, दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि, नाकोडा भैरव, घंटाकर्ण महावीर, श्री अंबिका देवी, श्री सरस्वती देवी, श्री काला गोरा भैरव, श्री पार्श्व यक्ष एवं श्री पद्मावती देवी की प्रतिष्ठा की गई।

जैसलमेर के पीत पाषाण में उत्तम कोरणी युक्त इस जिन मंदिर में केवल पार्श्वनाथ परमात्मा की एक ही खडी विशाल प्रतिमा बिराजमान की गई। दादावाडी में ध्यान–मुद्रा में दादा जिनदत्तसूरि की मनोहारी प्रतिमा बिराजमान की गई। परमात्मा व गुरुदेव की केवल एक एक प्रतिमा ही बिराजमान की गई।

जिन मंदिर व दादावाडी अलग अलग पास पास बनाये गये। इस मंदिर दादावाडी में 10 हजार से अधिक घन फीट पाषाण लगा। इसका निर्माण मात्र चार महिने में किया गया। श्री विजयराजजी सौ. पारसमणि देवी, पुत्र कुशलराज, जामाता संजयजी गुलेच्छा ने इस मंदिर दादावाडी के निर्माण में रात दिन एक किया। पूज्यश्री ने स्फटिक रत्न मय दादा गुरुदेव की दिव्य प्रतिमा श्री झाबकजी को दी।

ता. 3 फरवरी को द्वारोद्घाटन के साथ समारोह संपन्न हुआ।

सेलम में पूज्यश्री का पदार्पण

विहार करते हुए ता. 16 जनवरी को पूज्य उपाध्यायश्री सेलम नगर पधारे। परम गुरुभक्त पादरू निवासी श्री पुखराजजी सुमेरमलजी तातेड के घर पूज्यश्री के सकल संघ के पगले करवाये गये। पूज्यश्री का मंगल प्रवचन हुआ। 55 रजत मुद्राओं से पूज्यश्री का गुरु पूजन किया गया। पूज्यश्री ने अपने प्रवचन में जीवन को सार्थक दिशा प्रदान करने की प्रेरणा दी। ज्ञातव्य है कि श्री पुखराजजी तातेड श्री जिनहरि विहार के कोषाध्यक्ष

है। पादरू दादावाडी ट्रस्ट के सहसचिव है। अहमदाबाद की कई संस्थाओं से जुडे हुए हैं। तातेड परिवार की ओर से संघ पूजन किया गया तथा नाश्ते का आयोजन किया गया। वहाँ से सेलम उपाश्रय पधारे। सेलम संघ की ओर से सामैया किया गया। प्रवचन का आयोजन हुआ।

श्री विमलनाथ जिनकुशलसूरि दादावाडी संघ की स्थापना

ईरोड नगर में ता. 21 जनवरी 2015 को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से दादा गुरुदेव के अनुयायियों के संगठन हेतु संघ की स्थापना की गई। नामकरण का निवेदन पूज्यश्री से किया गया। संघ नाम उद्घोषणा का लाभ श्री शंकरलालजी केसरीमलजी बोथरा परिवार ने लिया। पूज्यश्री ने संघ का नाम लिखकर प्रपत्र श्री बोथराजी को सौंपा। श्री बोथराजी ने नाम की घोषणा की। श्री विमलनाथ जिनकुशलसूरि दादावाडी संघ नाम रखा गया।

इस संघ की स्थापना व सदस्य बनाने, विधान बनाने, भूमि अवाप्त करने व अन्य योजनाओं को आगे बढाने के लिये एक एडहॉक कमिटी बनाई गई। जिसमें सात सदस्य लिये गये। श्री रतनलालजी बोथरा, श्री मनोजजी वडेरा, श्री संदीपजी पारख जेठिया, श्री गौतमजी गोलेच्छा, श्री राजेन्द्रजी संखलेचा, श्री मोहनलालजी धारीवाल एवं श्री भरतकुमारजी डोसी को सम्मिलित किया गया। यह एडहॉक कमिटी विधान बनाना, सदस्य बनाना आदि कार्य करके शीघ्र ही संघ को व्यवस्थित रूप प्रदान करेगी।

पूज्यश्री ने कहा– शीघ्र से शीघ्र विशाल भूमि अवाप्त करके मंदिर, दादावाडी एवं उपाश्रय आदि का कार्य करना है। भूमि प्राप्त करने के लिये भूमिदाता की योजना घोषित की गई। श्री संदीपकुमारजी जवाहरलालजी पारख जेठिया परिवार ने मुख्य भूमिदाता का लाभ लिया। साथ ही रत्न भूमिदाता एवं स्वर्ण भूमिदाता में बडी संख्या में नाम आये।

चेन्नई में एक और दीक्षा होगी

चेन्नई नगर में ता. 2 मई 2015 को वैराग्यवती कुमारी ममता बरडिया की भागवती दीक्षा पूज्य गुरुदेव उपाध्यायश्री मणिप्रभसागरजी म.सा. एवं पू. पार्श्व मणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. सुलक्षणाश्रीजी म. आदि की निश्रा में चूले में आयोजित होगी।

ईरोड प्रतिष्ठा के अवसर पर दीक्षार्थी बहिन व उनके परिवार की विनंती पर पूज्यश्री ने शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। जेठिया परिवार द्वारा दीक्षार्थी बहिन का बहुमान किया गया।

यह ज्ञातव्य है कि कुमारी ममता की बडी बहिन पूजनीया साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. के पास दीक्षित है।

बैंगलोर मागडी रोड में दादावाडी बनेगी

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. श्री मागडी रोड जैन श्री संघ की भावभरी विनंती स्वीकार कर ता. 6 जनवरी 2015 को मागडी रोड पधारे। जहाँ श्री संघ द्वारा भव्य स्वागत किया गया। पूज्यश्री के सांसारिक मामाजी मोकलसर निवासी मातुश्री श्रीमती जडावीदेवी कपूरचंदजी पालरेचा परिवार की ओर से सकल श्री संघ के नाश्ते का आयोजन किया गया।

पूज्यश्री के सानिध्य में संघ के कार्यकारिणी समिति की बैठक में मंदिर के पास वाले विशाल हॉल में दादावाडी बनाने का तय किया गया। जिसमें मध्य में विशाल छतरी में दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि, मणिधारी जिनचन्द्रसूरि एवं श्री जिनकुशलसूरि की प्रतिमाजी बिराजमान होगी। साथ ही एक छतरी में आचार्य राजेन्द्रसूरि एवं आचार्य शांतिसूरि की प्रतिमा बिराजमान की जायेगी। साथ ही मंदिरजी में भगवान महावीर एवं श्री गौतमस्वामी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा होगी।

इस निर्णय से सकल संघ में अत्यन्त आनंद छा गया। उसी समय हाथोंहाथ बडी राशि भी एकत्र हो गई। दादावाडी की मूल छतरी का लाभ श्री पालरेचा परिवार ने लिया। पूज्यश्री के प्रवचन के पश्चात् पालरेचा परिवार

के घर पर पगले किये गये। यह जानकारी मागडी रोड सुमतिनाथ जैन श्वे. मंदिर के अध्यक्ष श्री प्रतापजी मेहता खिमेल वालों ने दी।

चंपावाडी सिवाना के चुनाव संपन्न

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ चंपावाडी ट्रस्ट, सिवाना के चुनाव ता. 23 जनवरी 2015 को वर्षगांठ के अवसर पर निर्विरोध संपन्न हुए। संघवी श्री वंसराजजी भंसाली पुनः अध्यक्ष पद पर चुने गये। उपाध्यक्ष पद पर श्री चंपालालजी भंसाली, श्री पुखराजजी चौपडा कोषाध्यक्ष, श्री भूरचंदजी जीरावला मंत्री चुने गये। श्री चुन्नीलालजी संखलेचा, श्री महेशकुमारजी नाहटा, संघवी श्री माणकचंदजी ललवानी, श्री चंदनमलजी धारीवाल, श्री डुंगरचंदजी चौपडा, श्री मोहनलालजी नाहटा, श्री महेन्द्रजी छाजेड ट्रस्टी चुने गये।

कार्य समिति में संघवी अशोककुमारजी भंसाली, श्री जवाहरलालजी ललवानी, श्री लालचंदजी रांका, श्री झणकारमलजी चौपडा, श्री सांकलचंदजी जीरावला, श्री पुखराजजी तातेड, श्री राणमलजी छाजेड, श्री नरेन्द्रकुमारजी संखलेचा, श्री जेठमलजी कवाड व श्री ललितकुमारजी छाजेड को लिया गया।

बैंगलोर कार्यक्रम

4 जनवरी, 2015 रविवार को प.पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा. के बैंगलोर मंगल प्रवेश पर पूज्य जनों के साथ तीन मुमुक्षुओं की भव्य शोभा यात्रा श्री विमलनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं दादाबाड़ी के प्रांगण से प्रारंभ होकर नगर के हृदय स्थल बसवनगुड़ी के राजमार्गों से होती हुई श्री जिन कुशल सूरि आराधना भवन के प्रांगण में पहुँची। शोभायात्रा में बैंगलोर के 25 मंडलों ने भाग लिया। 1.5 किमी लंबे वरघोड़े में मुमुक्षुओं की बग्घियां, बैण्ड की सुरीली ध्वनियां तथा गुरूभक्तों के नृत्य ने बरबस ही राह चलते व्यक्तियों का ध्यान आकर्षित किया।

शोभायात्रा आराधना भवन में पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गयी, जहां गुरूदेव के मंगलाचरण के पश्चात् ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी रांका ने पधारे हुए मेहमानों का भाव भरा स्वागत किया। श्री जिन कुशल सूरि धार्मिक पाठशाला के बच्चों द्वारा 'चारित्र ही जीवन का सार है' नामक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसने सभी का मन मोह लिया।

ट्रस्ट मंडल, श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ एवं श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ महिला परिषद् द्वारा मुमुक्षु सुश्री जया देवी सेठिया, सुश्री शिल्पा नाहर एवं श्री संयमकुमार सेठिया का तिलक, माला, श्रीफल एवं स्मृति–चिह्न के साथ भावभीना स्वागत किया गया। तीनों मुमुक्षुओं ने अपने उद्बोधन में संसार की नश्वरता एवं मनुष्य जन्म को कोहिनूर हीरे की तरह विशिष्ट बताया। जब बाल मुमुक्षु संयमकुमार ने उद्बोधन दिया तो उपस्थित जन समुदाय की आँखें भर आईं। 12 वर्ष उम्र में चारित्र ग्रहण कर अपने जीवन को सार्थक कर रहे संयमकुमार ने छोटी उम्र में उपधान तप की आराधना की हैऋ तथा कई ग्रन्थों का अभ्यास किया है।

पू. विरक्तप्रभ सागरजी म.सा. ने कहा– चारित्र से ही जीवन की सार्थकता है। संयम के बिना जीवन का कल्याण नहीं हो सकता।

पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. ने कहा– संयम ग्रहण की सही उम्र 8 से 15 वर्ष है। शासन में आज तक जितने भी बड़े शासन प्रभावक आचार्य हुए हैं, उन्होंने छोटी उम्र में ही दीक्षा ली थी। दादा गुरुदेव जिनदत्तसूरि, मणिधारी दादा श्री जिनचन्द्रसूरि, श्री हेमचन्द्राचार्य आदि कितने ही आचार्यों के नाम लिये जा सकते हैं।

कार्यक्रम के दौरान श्री राजेन्द्र जी ;स्थानीय प्रबंधक, राजस्थान पत्रिकाद्ध एवं श्री देवेन्द्र जी ;स्थानीय प्रबंधक, दक्षिण भारत राष्ट्र मतद्ध का ट्रस्ट मंडल के पदाधिकारियों द्वारा स्वागत किया गया। आराधना भवन की तीनों मंजिलें भक्तों से खचाखच भरी थीं। कार्यक्रम पश्चात् सकल श्री संघ का स्वामी वात्सल्य रखा गया।

कार्यक्रम का सफल संचालन श्री अरविन्द कोठारी ने किया।

पूज्यश्री का बैंगलोर प्रवास

परम पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा., पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा., पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा., पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. एवं पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा. बल्लारी नगर में भागवती दीक्षा करवाकर चल्लकेरे, हिरियूर आदि क्षेत्रों की संस्पर्शना करते हुए 1 जनवरी, 2015 को बैंगलोर नगर में नगर प्रविष्ठ हुए।

बिजयनगर में आंग्ल नववर्ष की महामांगलिक के महोत्सव का ऐतिहासिक आयोजन परम गुरुभक्त संघवी श्री विजयराजजी, हंसराजजी, कुशलराज, भाविक डोसी परिवार द्वारा किया गया। 2 जनवरी को पूज्यश्री संघवी श्री विजयराजजी डोसी के गृहांगण में बिराजे। 3 जनवरी को पूज्यश्री बसवनगुडी स्थित संघवी श्री पारसमलजी प्रकाशचंदजी भंसाली के घर पधारे।

श्री प्रकाशचंदजी–सौ. सुशीलादेवी भ्राताद्वय मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. एवं मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. के धर्म माता–पिता हैं। उनके आग्रह पर उनके घर पगलिये किये गये। श्री भंसाली परिवार की ओर से सामैया किया गया। प्रवचन के पश्चात् गुरु पूजन किया गया। तत्पश्चात् सकल श्री संघ के स्वामी वात्सल्य का आयोजन किया गया।

इस अवसर प्रवचन में पूज्यश्री ने धर्म माता–पिता की व्याख्या करते हुए कर्त्तव्यों का विश्लेषण किया। पूज्यश्री ने दोनों बालमुनियों को भी अपने धर्म माता–पिता की भावनाओं के अनुरूप अध्ययन और साधना में दृढ़ रहने का निर्देश दिया।

4 जनवरी को पूज्यश्री बसवनगुडी जिनकुशलसूरि आराधना भवन में बिराजे। बैंगलोर श्री विमलनाथ मंदिर एवं दादाबाड़ी बसवनगुडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा के बाद चे ई चातुर्मास की संप ता के पश्चात् बैंगलोर होते हुए पूज्यश्री उत्तर की ओर पधारे थे। लगभग 10 वर्षों के बाद पूज्यश्री के बैंगलोर पधारने पर संघ में अपार हर्ष का वातावरण बन गया था।

4 जनवरी को ही दीक्षार्थी संयम कुमार सेठिया, माताजी जयादेवी सेठिया एवं शिल्पाकुमारी नाहर के वर्षीदान का वरघोड़ा आयोजित किया गया। दीक्षार्थियों का बहुमान किया गया। 5 जनवरी को पूज्यश्री बसवनगुडी बिराजे। 6 जनवरी को मागडी रोड बिराजना हुआ।

7 जनवरी को पूज्यश्री शांतिनगर पधारे, जहाँ 10 वर्ष पूर्व पूज्यश्री की पावन निश्रा में श्री राजेन्द्रकुमारजी तिलोकचंदजी बोथरा परिवार द्वारा स्वद्रव्य से निर्मित श्री शांतिनाथ जिन मंदिर दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संप हुई थी। शांतिनगर संघ की ओर से सामैया किया गया। श्री संघ के नाश्ते के बाद प्रवचन का आयोजन हुआ। वहाँ से शाम को पूज्यश्री का ईरोड की ओर विहार हुआ।

ईरोड में अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न

ईरोड नगर में पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा., पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. एवं पूजनीया छत्तीसगढ़ रत्ना महत्तरा साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म., श्री मधुस्मिताश्रीजी म. तथा पूजनीया महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म.सा. श्री जितेन्द्रश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म., श्री तत्वज्ञलताश्रीजी म., श्री संयमलताश्रीजी म. आदि साधु–साध्वी मंडल की पावन निश्रा में श्रीमती विमलादेवी जवाहरलालजी पारख परिवार के श्री प्रदीपकुमारजी शरदकुमारजी पारख जेठिया परिवार की ओर से स्वद्रव्य से नवनिर्मित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर दादाबाड़ी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ संप हुई।

इस मंदिर में मूलनायक श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान, श्री गौतमस्वामी, दादा श्री जिनकुशलसूरि, नाकोड़ा भैरव एवं माँ अंबिकादेवी की प्रतिमाएं बिराजमान की गईं।

इस मंदिर दादाबाड़ी का निर्माण शासनरत्न श्री मनोजकुमारजी बाबूमलजी हरण की प्रेरणा से किया

गया। 19 जनवरी को पूज्यवरों के प्रवेश के साथ जलयात्रा का भव्य वरघोड़ा निकाला गया। श्री वासुपूज्य मंदिर से प्रारंभ होकर यह शोभायात्रा शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई महोत्सव स्थल पर पहुँची। ऐसी विशाल शोभायात्रा ईरोड में पहली बार आयोजित हुई। जनसमूह के साथ–साथ जो उल्लास छलक रहा था, वह अनूठा था। 20 जनवरी को कल्याणक विधान व अंजन–विधान किया गया।

इस परिसर का नाम रखा गया 'श्री मुनिसुव्रत कुशल धाम!' नाम उद्घोषित करने का लाभ श्री प्रदीपकुमारजी संदीपकुमारजी पारख जेठिया परिवार ने लिया। ध्वजा व मूलनायक बिराजमान करने के अलावा बाकी के चढ़ावे बुलाये गये।

इस अवसर पर पूरे भारत से विशिष्ट अतिथि गण पधारे। बैंगलोर से संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा, संघवी श्री विजयराजजी डोसी, चै ई से अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य श्री लोढा, श्री शांतिलालजी गुलेच्छा, श्री मुकेशजी गोलेच्छा, श्री शांतिलालजी कांकरिया, तिरूव ामल्लै, श्री शंकरलालजी घीया, मुंबई, श्री जगदीशजी भंसाली, पाली, श्री पवनकुमारजी पारख, सूरत, श्री पदमचंदजी नाहटा, कोलकाता, श्री विवेक भंसाली, जोधपुर, छत्तीसगढ़, रायपुर, दुर्ग, धमतरी आदि शहरों से अनेक गणमान्य महानुभावों ने अपनी उपस्थिति प्रदान की।

खरतरगच्छ संघ के चुनाव

श्री महावीर स्वामी जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, फीलखाना, हैदराबाद की नई कार्यकारिणी समिति का चुनाव 18 जनवरी, 2015 को श्री मोतीलाल जी ललवानी एवं वरिष्ठ सदस्य श्री चु ीलाल जी संकलेचा की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से संप हुआ।

इसमें श्री बाबूलाल जी संकलेचा, अध्यक्षऋ श्री रायचन्द जी छाजेड़, उपाध्यक्षऋ श्री हस्तीमल जी हुण्डिया, मंत्रीऋ श्री पारसमल जी मरड़िया, सहमंत्रीऋ श्री प्रवीण कुमार जी संकलेचा, कोषाध्यक्ष चुना गया। समिति सदस्य के रूप में श्री मेघराज गुलेच्छा, श्री रमेश कुमार पारख, श्री दयालाल झाबक, श्री कांतिलाल छाजेड़, श्री मीठालाल बाफना, श्री ललित कुमार संकलेचा, श्री बाबूलाल ललवानी, श्री जसराज बाफना, श्री बाबूलाल छाजेड़ एवं श्री प्रशान्त श्रीश्रीमाल को चयनित किया गया। श्री मोतीलाल जी ललवानी एवं श्री चु ीलाल जी संकलेचा सलाहकार के रूप में अपनी सेवायें देते रहेंगे।

संघ के चुनाव सर्वसम्मति से होने पर श्री मोतीलाल जी ललवानी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए हर्ष व्यक्त किया।

कुशल वाटिका की द्वितीय वर्षगांठ व महापूजन सम्पन्न

बाड़मेर 23 जनवरी। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 15 पर स्थित प.पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के आर्शीवाद व बहिन म.सा. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से बनी भारत विख्यात कुशल वाटिका परिसर में मुनिसुव्रत स्वामी जिन मन्दिर, दादाबाड़ी, नवग्रह मन्दिर, देव–देवी मन्दिर, गुरू मन्दिर आदि की प्रतिष्ठा की द्वितीय वर्षगांठ प.पू. साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में हर्षोलास पूर्वक सम्प हुई।

प्रातः 10 बजे सत्रहभेदी पूजा का आयोजन विधिकारक अंकुर भाई, सूरत वालों व उदय गुरू के द्वारा करवाया गया। उसके बाद मुख्य द्वार से सभी नौ मन्दिरों के लाभार्थी परिवार नूतन ध्वजाओं को सिर पर धारण कर बैण्ड–बाजों के साथ पूज्या साध्वी जी की निश्रा में नाचते–गाते मुख्य मन्दिर पहुँचे, जहाँ पूज्या श्री द्वारा ध्वजाओं को अभिमंत्रित कर वासक्षेप देकर तीन प्रदक्षिणा के साथ ' पुण्याहम्–पुण्याहम्, प्रियंताम्–प्रियंताम्' के जयघोष के साथ शुभ मुहुर्त में प.पू. साध्वी सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. के मुखारबिंद से मंत्रोच्चार के साथ सभी नौ मन्दिरों पर वार्षिक कायमी ध्वजा चढ़ाई गयी।

द्वितीय वर्षगांठ के उपलक्ष्य में धर्मसभा का आयोजन हुआ, जिसमें पूज्या साध्वी श्री श्रमणीप्रज्ञाश्रीजी ने अपने प्रवचन में कुशल वाटिका का वर्णन करते हुए प.पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. की वृहद सोच व बहिन म.सा. श्री विद्युत्प्रभा श्री जी की कल्पना की विस्तृत जानकारी देते हुए धर्म व शिक्षा के क्षेत्र में इसे

विश्व का विशाल सेवा संकुल बताया। पूज्या साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम भाग्यशाली हैं कि हमें कुशल वाटिका जैसी अनमोल वाटिका बाड़मेर में मिली है, जिसमें विशाल जिन मन्दिर, दादाबाड़ी, भोजनशाला, उपाश्रय, दो विद्यालय, हॉस्टल सहित सारी सुविधाएं एक ही परिसर में हैं।

धर्मसभा में मुनिसुव्रत स्वामी भगवान का महापूजन विधिकारकों द्वारा मंत्रोच्चार पूर्वक सम्प करवाया गया। आज के स्वामी वात्सल्य का लाभ भंवरलाल विरधीचन्द छाजेड़ परिवार, हरसाणी वालों नेत्रू नाश्ते का लाभ मेवाराम रूगामल घीया परिवार, भीयाड नेत्रू पूजा का लाभ बाबूलाल टीलचन्द बोथरा परिवार ने एवं जय जिनेन्द्र का लाभ गोदावरी देवी व्यापारीलाल बोहरा, हालावाला परिवार ने लिया। ट्रस्ट मण्डल की ओर से सभी लाभार्थियों का अभिनन्दन किया गया। धर्मसभा में वार्षिक चढ़ावे बोले गये व कुशल वाटिका वर्षगांठ कार्यक्रम में सेवा देने वाले सभी जैन मण्डलों व कार्यकर्ताओं का आभार प्रकट किया गया।

इस द्वितीय वर्षगांठ व धर्मसभा में नगर परिषद के सभापति श्री लूणकरण बोथरा, नाकोड़ा ट्रस्ट अध्यक्ष श्री अमृतलाल जैन, कुशल वाटिका ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री भंवरलाल छाजेड, महामंत्री श्री मांगीलाल मालू, कोषाध्यक्ष श्री बाबूलाल टी. बोथरा, उपाध्यक्ष श्री द्वारकादास डोसी, मंत्री श्री सम्पतराज बोथरा, प्रचारमंत्री श्री केवलचन्द छाजेड, ट्रस्टी श्री रतनलाल संखलेचा, श्री सम्पतराज बोथरा, श्री चम्पालाल छाजेड़, श्री सम्पतराज धारीवाल, श्री भंवरलाल सेठिया, श्री सम्पतराज मेहता, श्री बंशीधर बोथरा, श्री बाबूलाल लूणिया, श्री कैलाश कोटडिया, श्री रिखबदास मालू, श्री बाबूलाल संखलेचा, श्री छगनलाल घीया, श्री गौतमचन्द हालावाला, श्री बाबूलाल मालू, श्री उदयराज गांधी सहित मुम्बई, सूरत, अहमदाबाद, मालेगांव, पाली, जोधपुर, बालोतरा, जिजनियाली, विशाला, देवडा, रामसर, चौहटन, धोरीमन्ना आदि आसपास के क्षेत्रों से सैकड़ों भक्तों ने अपनी उपस्थिति प्रदान की।

— केवलचन्द छाजेड़, प्रचारमंत्री, कुशल वाटिका

दादावाड़ी प्रतिष्ठा महोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न

जैसलमेर के पास स्थित श्री लौद्रवपुर तीर्थ पर स्थित प्राचीन दादाबाड़ी की पुनः प्रतिष्ठा परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य प्रशिष्य पूज्य शांतमूर्ति मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. एवं पूज्य प्रवचनकार मुनि श्री मनीषप्रभसागर जी म.सा. की पावन निश्रा एवं पूज्या साध्वी श्री मनोरंजना श्री जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सानिध्य में ता. 26 जनवरी 2015 को शुभ मुहूर्त में ' पुण्याहम्–पुण्याहम्, प्रियंताम्–प्रियंताम्' के साथ संपन्न हुई। दादा गुरूदेवों की प्रतिमा व गुरूमूर्ति के साथ काला भैरव, गोरा भैरव आदि बिम्बों की भव्यातिभव्य शुभ प्रतिष्ठा विधि विधान से पूज्य मुनि श्री व साध्वी मण्डल ने सम्प करवाई। नूतन ध्वज–दण्ड स्थापित कर नई ध्वजा फहराई गई। दोपहर में दादा गुरूदेव का महापूजन प्रतिष्ठा लाभार्थी परिवार द्वारा कराया गया। समारोह का सफल संचालन महेन्द्रभाई बापना ने किया।

इस दादावाडी का जीर्णोद्धार श्री जिनदत्तसूरि मंडल के तत्वावधन में फलोदी निवासी गोलेच्छा परिवार द्वारा करवाया गया।

इस अवसर पर आयोजित धर्मसभा में पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागर जी म.सा. ने कहा कि संत्सग से मानव के जीवन में एक अनूठे अध्यात्मिक चिन्तन का संचरण होता है। धर्मस्थान एवं साधु सन्तों का सा ध्य आधुनिक भौतिकवादी युग में आत्मसुख अनुभव करने का एक मात्र सच्चा स्थान है। व्यक्ति की पहचान उसके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से होती है।

पूज्या साध्वी श्री मनोरंजना श्रीजी ने कहा कि दादा गुरूदेव के दर्शन–स्मरण से व्यक्ति के दुःख–दर्द दूर हो जाते हैं। साध्वी श्री शुभंकरा श्री जी म.सा. ने कहा कि अंरिहत परमात्मा से भी ज्यादा उपकार हम पर दादा गुरूदेव का है। गुरू की वाणी के कारण ही हम निगोद से बाहर निकल कर यहाँ आये हैं। अनीति का धन जीवन में बर्बादी लाता है, अत्यधिक भोग पागलपन लाता हैत्रू अतः सन्तोषी होकर जीना ही श्रेष्ठ है।

रविवार की रात्रि में भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। जयकारों, नवकारों व महामंत्रों के मध्य चली इस भक्ति संध्या में छत्तीसगढ़ से आये अंकित लोढ़ा ने हृदय को छू लेने वाले भजन पेश किये।

भद्रावती तीर्थ में त्रयान्हिका महोत्सव

भद्रावती तीर्थ में 23 जनवरी को प.पू. माताजी म. श्री रतनमाला श्री जी म.सा., प.पू. शासनप्रभा श्री जी म.सा. आदि ठाणा 4 की पावन निश्रा में ध्वजारोहण का कार्यक्रम हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर तीन दिन का कार्यक्रम रखा गया।

प्रथम दिन अठारह अभिषेक किया गया व महालक्ष्मी बिराजमान किये गये। लक्ष्मी जी को बिराजमान करने का लाभ लिया शा. खजांची परिवार, गोंदिया ने। दूसरे दिन विजय मुहूर्त में बड़े धूमधम से केशरिया पार्श्वनाथ, गौतमस्वामी व दादागुरूदेव के ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्प हुआ। इसका लाभ लिया मुथा परिवार एवं पारख परिवार ने। तीसरे दिन योगीराज श्री शांतिसूरि जी की 125वीं तिथि मनायी गयी। तीनों दिन स्वामीवात्सल्य रखा गया।

इस अवसर पर नागपुर, चंद्रपुर, नांदेड़, धमण, बड़ौदा आदि स्थानों से श्रद्धालुओं का पदार्पण हुआ।

जन्म दिवस की शुभ घड़ियां
0 मणि चरण रज मुनि विरक्तप्रभसागर
तर्ज– रेशमी सलवार....
जन्म दिवस की शुभ घड़ियां ये आयीं जी।
गुरुवर मणिप्रभजी को देते सभी बधाई जी।।टेर।।
श्री सिद्धाचल पर आकर, गुरुवर ने संयम धारा।
माता–बहिना के संग में, प्रभु वीर पंथ स्वीकारा।
धन्य पुण्याई जी।।1।।
मोकलसर में जन्म लिया है, पारसमलजी के प्यारे।
लुंकड़ कुल के नव नंदन, हम सबके राज दुलारे।।
बजी शहनाई जी।।2।।
जिनकान्तिसागरसूरि, गुरुवर का मिला है शासन।
अनुशासन में गुरुवर ने, कीना शास्त्रों का वांचन।।
शिक्षा पाई जी।।3।।
प्रतिष्ठाएं करवाईं, कितने ही तीर्थ बनाये।
जहाज मंदिर प्यारा, सारे जग में नाम कमाये।।
छवि मन छाई जी।।4।।
मुनि विरक्त शरणे आया, अमीवृष्टि मुझ पर करना।
अपने सम मुझे बनाना, मेरी यही विनंती सुनना।।
भावना भाई जी।।5।।

तिरूपुर में दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न

तमिलनाडु प्रान्त के तिरूपुर नगर में श्री पार्श्वनाथ परमात्मा के शिखरबद्ध मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. एवं पूजनीया छत्तीसगढ़ रत्ना महत्तरा साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. , श्री मधुस्मिताश्रीजी म. तथा पूजनीया महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म.सा. श्री जितेन्द्रश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म., श्री तत्वज्ञलताश्रीजी म., श्री संयमलताश्रीजी म. आदि साधु–साध्वी मंडल की पावन निश्रा में ता. 26 जनवरी 2015 को अत्यन्त आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

इस नगर में विहार करते हुए 15 वर्ष पूर्व पधारे पू. साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. ने इस नगर में दादावाडी बनाने की प्रेरणा दी। संघ का गठन हुआ। चार पांच वर्ष श्री मनोजकुमारजी हरण पधारे। और जिन मंदिर दादावाडी का भूमिपूजन, खात मुहूर्त्त व शिलान्यास संपन्न हुआ। संघ का यह दृढ निश्चय था कि इस मंदिर दादावाडी की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्यायश्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के करकमलों से ही संपन्न हो।

पूज्य गुरुदेवश्री का ज्योंहि दक्षिण प्रान्त में पधारना निश्चित हुआ। तो तिरूपुर संघ ने कार्य को गति प्रदान करते हुए इचलकरंजी चातुर्मास में प्रतिष्ठा की जय बोलाई।

महोत्सव का प्रारंभ 19 जनवरी को कुंभ स्थापना से हुआ। ता. 23 जनवरी को पूज्य गुरु भगवंतों का मंगल प्रवेश हुआ। ता. 25 जनवरी को भव्यातिभव्य शोभायात्रा का आयोजन श्री सुविधिनाथ मंदिर से किया गया। समस्त जैन समाज के अलावा तमिल समाज के लोगों का सहयोग पूर्ण रहा।

26 जनवरी को ओम् पुण्याहं पुण्याहं के दिव्य मंत्रोच्चारणों के साथ परमात्मा को गादीनशीन किया गया। मूल गंभारे में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा बिराजमान की गई। बाहर कोली मंडप में श्री मुनिसुव्रतस्वामी एवं श्री आदिनाथ प्रभु को बिराजमान किया गया। परमात्मा के दायीं ओर बनी छत्री में प्रथम गणधर अनंत लब्धिनिधान गुरु गौतम स्वामी को बिराजमान किया गया। जबकि बायीं ओर बनी छत्री में तीसरे दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि की प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई।

रंगमंडप में बने चार गोखलों में श्री नाकोडा भैरव, श्री भोमियाजी, श्री अंबिकादेवी एवं श्री पद्मावती देवी को बिराजमान किया गया।

शासन रत्न श्री मनोजकुमारजी हरण ने मार्गदर्शन के साथ साथ बोलियां बुलवाई। बोलियों का एक इतिहास बना।

ध्वजा चढाने हेतु सामूहिक वार्षिक योजना रखी गई। जिसमें 25 परिवारों ने लाभ लिया। उनके वर्ष लॉटरी के माध्यम से निश्चित किये गये। क्रमशः वे एक से पच्चीस वर्षों तक ध्वजा चढायेंगे। उसके बाद पुनः यही क्रम जारी रहेगा। इस वर्ष पहली ध्वजा चढाने का लाभ चौहटन निवासी श्री द्वारकादासजी भगवानदासजी डोसी परिवार को प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर चेन्नई, ईरोड, तिरूपातूर, बैंगलोर, कोयम्बतूर, मुंबई, बाडमेर, चौहटन, मेट्टुपालयम आदि क्षेत्रों से बडी संख्या में अतिथि गण पधारे थे।

ता. 27 जनवरी को प्रातः मंगल मुहूर्त्त में द्वारोद्घाटन किया गया। दादा गुरुदेव की पूजा पढाने के साथ समारोह पूर्ण हुआ। इस समारोह को सफल बनाने में स्थानीय जैन समाज, चेन्नई से पधारे जैन युवा मंच, राहुल सिंघवी तमन्ना इवेण्ट आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

मुख्य ध्वजा लाभार्थी— श्री मोहनलालजी द्वारकादासजी कन्हैयालालजी डोसी, चौहटन

मूलनायक बिराजमान— श्रीमती ढेली देवी केशरीमलजी बोथरा, बाडमेर

मुख्य स्वर्ण कलश— श्री शंकरलालजी केशरीमलजी बोथरा, बाडमेर

श्री मुनिसुव्रतस्वामी बिराजमान— अभिनंदन ट्रेडिंग कं., बाहुबली कॉर्पोरेशन, तिरपुर

साधु साध्वी समाचार

0 पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म.सा. अहमदाबाद से विहार कर डीसा, पांथावाडा, भीनमाल होते हुए जहाज मंदिर मांडवला गुरु धाम पधारे। ता. 2 फरवरी को उनकी पावन निश्रा में जहाज मंदिर की वर्षगांठ मनाई गई। वहाँ से वे विहार कर ब्रह्मसर पधारेंगे।

0 पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. चौहटन उपधान की संपन्नता के पश्चात् विहार कर जैसलमेर, अमरसागर, ब्रह्मसर आदि तीर्थों की यात्रा करते हुए लौद्रवपुर पधारे, जहाँ उनकी निश्रा में 26 जनवरी को जीर्णोद्धार कृत दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न हुई। तत्पश्चात् वहाँ से पोकरण होते हुए फलोदी की ओर विहार करेंगे। वहाँ उनकी निश्रा में 11 फरवरी को दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

0 पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. मेहुलप्रभसागरजी म. सा. सूरत बडौदा होते हुए खंभात पधारे। खरतरगच्छ के आराध्य देव श्री स्तंभन पार्श्वनाथ परमात्मा की यात्रा संपन्न की। वहाँ से विहार कर ता. 21

जनवरी को पालीताना पधार गये हैं। वहाँ व्याकरण, न्याय का अध्ययन प्रारंभ है। आगामी चातुर्मास पालीताना में होगा।

0 पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. समयप्रभसागरजी म. श्रेयांसप्रभसागरजी म. तिरूपातूर बिराज रहे हैं। वहॉ से विहार कर वे बैंगलोर पधारेंगे, जहॉ ता. 2 मार्च को शुभ मुहूर्त्त में उनकी पावन निश्रा में श्री विमलनाथ जिन मंदिर दादावाडी में एक देवकुलिका में दादा गुरूदेव श्री जिनकुशलसूरि की प्रतिष्ठा करवायेंगे। वहॉ से विहार कर अम्बूर तिन्नपट्टी पधारेंगे, जहॉ उनकी निश्रा में ता. 12 मार्च को प्रतिष्ठा संपन्न होगी। वहॉ से पूज्यश्री चेन्नई की ओर विहार करेंगे।

0 पूजनीया संघरत्ना साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा जयपुर बिराज रहे हैं। उनकी पावन निश्रा में ता. 18 जनवरी को जवाहरनगर श्री महावीरस्वामी जिन मंदिर दादावाडी में शांतिसूरि आदि प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा संपन्न हुई है। उनका विहार संभवतः बीकानेर की ओर होगा।

0 पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा नागपुर से ता. 17 जनवरी को विहार कर भद्रावती, चन्द्रपुर, आसीफाबाद होते हुए ता. 14 फरवरी तक वारांगल पहुँचेंगे। वहाँ से विजयवाडा होते हुए चैत्री ओली तक चेन्नई पहुँचने की संभावना है।

0 पूजनीया मारवाड ज्योति साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा हुबली से विहार कर गदग पधारे हैं। वहाँ से स्वास्थ्य की अनुकूलतानुसार विहार कर कोप्पल, हॉस्पेट होते हुए बल्लारी पधारेंगे।

0 पूजनीया महातपस्वी साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा जयपुर बिराज रहे हैं। वहाँ मोतीडुंगरी रोड स्थित प्राचीन दादावाडी में 23 फरवरी को होने वाले दादा गुरुदेव की प्रतिष्ठा महोत्सव को अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे।

0 पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा., पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. ठाणा भद्रावती पधारे। वहाँ से विहार कर हिंगनघाट पधारे हैं। जहाँ ता. 24 जनवरी को जिन मंदिर की वर्षगांठ पर ध्वजारोहण के पश्चात् नागपुर की ओर विहार किया है। नागपुर में 4–5 दिन की स्थिरता के पश्चात् छत्तीसगढ की ओर विहार करेंगे।

0 पूजनीया धवल यशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा बाहुबली आदि तीर्थों की यात्रा करते हुए मैसुर पधारे। वहाँ से 22 जनवरी को विहार कर चामराजनगर, सत्यमंगलम् होते हुए ता. 1 फरवरी तक कोयम्बतूर पधार गये हैं। वहाँ से मदुराई होते हुए कन्याकुमारी पधारेंगे।

0 पूजनीया साध्वी मनोरंजनाश्रीजी म.सा. श्री शुभंकराश्रीजी म.सा. आदि ठाणा ने जैसलमेर से फलोदी की ओर विहार किया है।

0 पूजनीया साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. सुमित्राश्रीजी म.सा. ठाणा 4 कोयम्बतूर बिराज रहे हैं। पू. साध्वी श्री प्रियमित्राश्रीजी म. के पांव में तकलीफ है। वे यहाँ स्वास्थ्य लाभ हेतु बिराज रहे हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 8 ने प्रतिष्ठा के पश्चात् जैसलमेर से फलोदी की ओर विहार किया है। फलोदी में होने वाली प्रतिष्ठा में पधारेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा ने चौहटन से पाली की ओर विहार किया है। वे पाली में गौतम गुण विहार में ता. 2 फरवरी को आयोजित अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारेंगे।

0 पूजनीया साध्वी डॉ. श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. ठाणा 4 की निश्रा में बाडमेर कुशल वाटिका में दूसरी वर्षगांठ का भव्य आयोजन हुआ। वहाँ से नाकोडाजी की ओर विहार किया है। ता. 2 फरवरी को होने वाली समवशरण मंदिर के प्रतिष्ठा महोत्सव में अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.सा. विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. ठाणा 3 सोलापुर से बिजापुर होते हुए ता. 28 जनवरी को चित्रदुर्गा पधारे। वहाँ से विहार कर हिरियुर होते हुए फरवरी के प्रारंभ में बैंगलोर पधारे। वहाँ से कन्याकुमारी की ओर विहार करेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.सा. ठाणा 7 बल्लारी से विहार कर कम्पली पधारे हैं। वहाँ से 31 जनवरी को विहार कर हॉस्पेट होते हुए कोट्टूर पधारेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 मैसूर बिराज रहे हैं। वहॉ से विहार कर हुबली,

इचलकरंजी, पूना होते हुए मुंबई की ओर विहार करेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 धोलका बिराज रहे हैं। उनकी निश्रा में ता. 2 फरवरी को जिन मंदिर दादावाडी की वार्षिक ध्वजा चढाई गई। तत्पश्चात् विहार कर अहमदाबाद पधारे हैं।

0 पूजनीया डॉ. साध्वी श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 हुबली से विहार कर बीजापुर, सोलापुर, नांदेड, यवतमाल होते हुए ता. 22 जनवरी को हिंगनघाट पहुँचे। जहाँ अपनी गुरुवर्या बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. के दर्शन किये।

0 पूजनीया साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. ठाणा 3 पार्श्वमणि तीर्थ बिराज रहे हैं। उनकी पावन निश्रा में पार्श्वमणि तीर्थ पर दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म.सा. की पुण्यतिथि पर मेले का आयोजन ता. 18 फरवरी को आयोजित होगा। होली तक पूज्याश्री यहीं पर बिराजेंगे।

0 पूजनीया साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. दीपमालाश्रीजी म. जोधपुर बाडमेर भवन में स्वास्थ्य लाभ हेतु बिराज रहे हैं।

0 पूजनीया साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. ठाणा 3 ने कोयम्बतूर प्रतिष्ठा के पश्चात् तिरूपात्तूर की ओर विहार किया है। अम्बूर के पास तिन्नपट्टी में 12 मार्च को होने वाली प्रतिष्ठा में अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे। वहॉ से तिरूपातूर पधारेंगे, जहॉ उनकी प्रेरणा से होने वाले सामूहिक वर्षीतप के प्रत्याख्यान 14 मार्च को करवायेंगे।

नीमच नगरपालिका के अध्यक्ष श्री राकेश जैन चुने गये

नीमच नगर के भाजपा पक्ष के जिला कोषाध्यक्ष श्री राकेश उर्फ पप्पु जैन कोठीफोडा नीमच नगरपालिका के अध्यक्ष चुने गये। वे मध्य प्रदेश में सर्वाधिक वोटों से जीते। ये मूलतः पिपलीयारावजी गांव के हैं। दादा गुरुदेव के परम भक्त श्री जैन खरतरगच्छ परम्परा के अनुयायी है।

सन् 2004 से 2009 तक नगरपालिका में नेता प्रतिपक्ष की भूमिका निभा चुके हैं। जहाज मंदिर परिवार उन्हें विजय के लिये बधाई देता है और उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

नोट– फोटो वाट्स अप से भेजा है।

जहाज मंदिर वर्षगांठ संपन्न

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक जहाज मंदिर की 16वीं वर्षगांठ पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म. पू. मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. की पावन निश्रा में माघ सुदि 14 सोमवार ता. 2 फरवरी 2015 को मनाई गई। अठारह अभिषेक करवाये गये। सतरह भेदी पूजा पढाने के साथ शिखर पर ध्वजा चढाई गई। मुख्य ध्वजा के अमर लाभार्थी श्री पारसमलजी भानमलजी छाजेड परिवार की ओर से उनके परिवार ने ध्वजा चढाई। इस अवसर पर पूजनीया साध्वी श्री मुक्तिप्रियाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का ट्रस्ट के आग्रह पर पदार्पण हुआ।

इस अवसर पर प्रवचन फरमाते हुए पूज्य मुनिश्री ने कहा– पूज्य गुरुदेव की स्मृति में बना यह जहाज मंदिर संसार सागर को तिरने का एक उपक्रम है। इस मंदिर का अनूठा स्थापत्य, पूर्ण रूप से स्वर्ण अभिमंडित परिकर सहित परमात्मा की अलौकिक दिव्य प्रतिमा एक शान्ति भरा सुकून देती है। और यहाँ जो कांच का काम हुआ है, ऐसा लगता है जैसे हम किसी अन्य लोक में आ गये हैं।

उन्होंने कहा– यह सब पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री की कृपा का ही फल है। मुझ पर पूज्य गुरुदेवश्री की पूर्ण कृपा थी। आज मैं जो कुछ भी हूँ, वह सब पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद का ही फल है।

ट्रस्ट की ओर से पूज्यश्री को कामली वहोराई गई। गुरुपूजन किया गया। अष्टप्रकारी पूजा के वार्षिक चढावे बोले गये।

बैंगलोर में प्रतिष्ठा 2 मार्च को

बैंगलोर बसवनगुडी दादावाडी के मूल गर्भगृह में दायीं ओर बनी अभिनव देवकुलिका में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि की प्रतिमा की प्रतिष्ठा फाल्गुन सुदि 12 सोमवार ता. 2 मार्च को संपन्न होगी। यह प्रतिष्ठा पूज्यपाद गुरुदेव आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में संपन्न होगी।

इस प्रतिष्ठा के निमित्त त्रिदिवसीय पूजा का कार्यक्रम होगा। जिसके अन्तर्गत प्रथम दिन कुंभस्थापना, दीपस्थापना की जायेगी तथा पंचकल्याणक पूजा पढाई जायेगी। दूसरे दिन अठारह अभिषेक व ता. 2 मार्च को प्रतिष्ठा व दादा गुरुदेव की पूजा पढाई जायेगी।

तेनमपट्ट में प्रतिष्ठा 12 मार्च को होगी

तिन्नपट्टी नामक गांव में तीर्थ स्वरूप श्री पार्श्वनाथ जिन प्रतिमा की प्रतिष्ठा पूज्यपाद गुरुदेव आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में चैत्र वदि 6 गुरुवार ता. 12 मार्च 2015 को संपन्न होगी।

लगभग 2000 वर्ष प्राचीन परिकर सहित पार्श्वनाथ परमात्मा की दिव्य प्रतिमा तमिलनाडु प्रान्त के वेल्लूर जिले में तेनमपट्ट नामक गांव जो बैंगलोर–चेन्नई मुख्य मार्ग पर स्थित अम्बुर से 8 कि.मी. अन्दर है, में एक पेड के नीचे बने चबूतरे पर बिराजमान है। ज्ञात होने पर पिछले दश वर्षों से तिरूपातूर निवासी श्री गौतमचंदजी कवाड आदि प्रयत्न कर रहे थे कि यह अनमोल प्रतिमा जैन संघ को प्राप्त हो और जिन मंदिर में प्रतिष्ठित हो। गांव में चूंकि एक भी घर वर्तमान में जैन धर्मावलम्बी नहीं होने से वे लोग अपने हिसाब से सेवा पूजा करते थे। लेकिन उन लोगों में परमात्मा के प्रति श्रद्धा भरपूर है। वे इस प्रतिमा को चमत्कारी मानते हैं। उनका कहना है कि जब से हमारे गांव में परमात्मा प्रकट हुए हैं, तब से गांव की जाहोजलाली बढी है। हम जो भी मनौती मानते हैं, पूरी होती है। इस कारण प्रतिमा हम आपको अर्पण नहीं करेंगे। आपको यदि मंदिर बनाना है, तो यहीं बना दीजिये।

भगवान की सेवा पूजा कैसे की जाती है, वो हमको समझा दीजिये, हम उसी विधि से करेंगे। प्रायः गांव वालों ने मांसाहार का त्याग कर दिया है।

श्री पार्श्व कुशल तीर्थ धाम नामकरण करते हुए जिन मंदिर बनाने का निश्चय किया। जिसका भूमिपूजन, खातमुहूर्त्त पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. द्वारा प्रदत्त ता. 29 जनवरी 2015 को शुभ मुहूर्त्त में किया गया। उसी दिन विजय मुहूर्त्त में शिलान्यास की विधि संपन्न की गई। जीर्णोद्धार स्वरूप जिन मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया। इस मंदिर के निर्माण आदि में संपूर्ण व्यय चार महानुभाव कर रहे हैं। पूजनीया महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म. जितेन्द्रश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. की प्रेरणा से एक गुरुभक्त परिवार, तिरूपातूर तथा तिरूपातूर निवासी श्री पन्नालालजी गौतमचंदजी कवाड, श्री ललितकुमारजी निहालचंदजी ललवानी, श्रीमती विमलाबाई विमलचंदजी मूथा अम्बुर निवासी लाभ ले रहे हैं।

इस मंदिर में परमात्मा पार्श्वनाथ प्रभु, दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि एवं माता पद्मावती देवी की प्रतिमा प्रतिष्ठित की जायेगी।

प्रेषक
जहाज मंदिर कार्यालय
ता. 2 फरवरी 2015